

नई कविता में शिल्पगत नवीनता

नई कविता में शिल्प की दृष्टि से अत्यंत ही परिवर्तन देखा जाया है। भाषा, छिन्न, प्रतीक, छंद, लय, तुक, छल्लेदार आदि के नये-प्रयोग ने नयी कविता को नया स्वरूप दिया। नये कवियों ने भाषा के विविधता, प्रहास, रंगोद्यत, दृष्टांत, उद्धृतिमान, प्रमाथी, कुञ्जाटिका, छर्वदाबी, दोगिया, लपटूरी, ईषत्कंपित, परभूता, निरादर्श, तव और मुम शब्दों का प्रयोग किया है। इसके साथ ही कवियों ने सभी पुरानी भाषा के शब्दों को त्यागकर नई योजना बनायी।

किसी के प्रयोग में कवियों ने गौन कूँडाओं एवं वर्जित विषयों को भी स्पर्शित किया। कैरेण्टी को इस नयी दिशा मुक्तिबोध ने दी जिसे उदाहरण है -

"काव्य की इन घनी गहराइयों में शून्य
ब्रह्मसूत्र यह कैसा है।

x x x x x x x x
टेली फोन - खंभों पर चढ़े हुए तारों ने
सरे के दूँक - काल धुरों में

झरना और झनझनाना शुरू किया।"

प्रतीक के प्रयोग में भी कवियों ने अपनी नवीन प्रतिभा को दिखाया।

उन्होंने स्वल्प को पहचान कर अनर्गल, असंवेद्य प्रतीकों का मोह त्यागकर ऐसे प्रतीकों का प्रयोग शरंभ किया, जो सहज संवेद्य बनने में समर्थ थे। कुछ ऐसी कविताएँ तो प्रती-प्रती प्रतीकों में ही लिखी गयीं।

उदाहरण :- "इन्हीं रेडियम के अँकों की लघु छाया पर
हो जाहों का वह नूपचाप मिलन था।"

अज्ञेय के बहुत से प्रतीक गुगुप्सा, गाव की प्रायः गंगा देते हैं -

"यह कली झुरपुट झंझरे में
पली थी देहात की गली में"

ओली, जली

नगर के राजपथ दिपते

प्रकाश में गयी छली ।"

नई कविता में लय, लुट, छंद एवं झलकार का भी बिल्कुल ही नया रूप अपनाया गया है। कवियों ने इनके वंचन को अस्वीकार कर दिया और बाद, पंक्ति, लय आदि को अपनी काल्पनिक रचनाओं में स्वच्छंद रूप से आगे बढ़ने दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि कई पद्य रचनाएँ गद्य काल्य की रचना बन गयी। इस काल की कविता में उर्दू की गजल शैरी, रुबाई तथा फ़ारसी के सोनेट आदि छंद को भी अपनाकर छंद के नए-नए प्रयोग किये गये।

नई कविता में सुगंध, रूप, लुट, झलकारों के स्थान पर कृतक अर्थों को प्रतिबिम्बित करने वाले स्वतंत्र, स्वतंत्र पदों की अदम्य दिखाने बढ़ती हैं। इस काल के कवि दिन को हिरण-सा चौकड़ी भरा हुआ देखते हैं, शाम को सोनचिरेगा की गीढ़ में जाकर सोता देखते हैं, नदी को एक नौजवान दीठ लड़की के रूप में चित्रित करते हैं, प्रातःकाल को बच्चे घर के बचने के पानी में डूबे हुए देखते हैं आदि।